वेदों की ओर लौटो !

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

वैदिक गर्जना

तपस्वी व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष २१ अंक ०१ - १० जनवरी २०२१

म.दयानन्द को पुणे में आमंत्रित करनेवाले

न्यायमूर्ति म.गो.रानडे

सदैव याद आते रहेंगें...!

देहातों व नगरों में घूम-घूम कर वेदप्रचार, विवाहादि संस्कारों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करानेवाले महाराष्ट्र के आर्य विद्वान्, कुशल पुरोहित, वेदप्रचारक तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता...

दिवंगत पं.सुधाकरजी शास्त्री

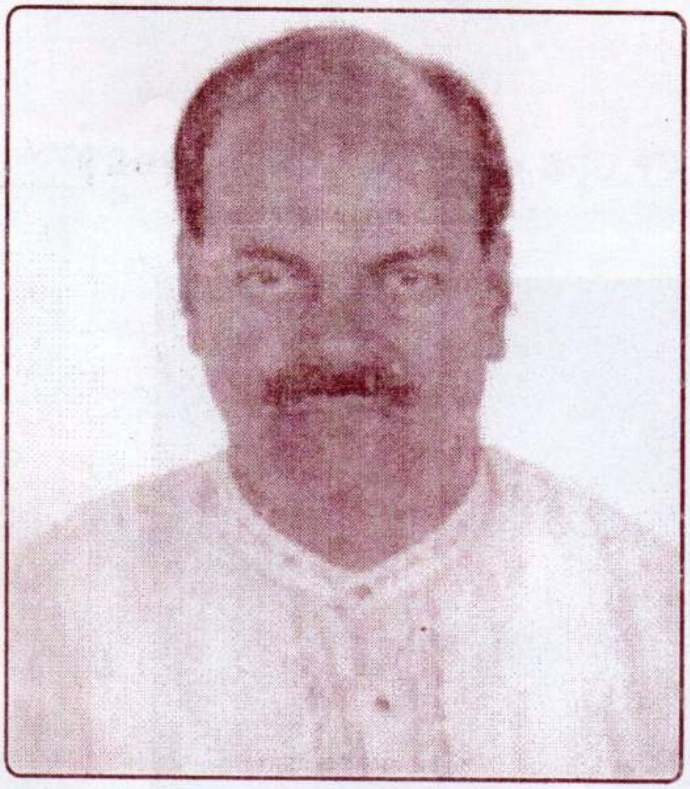

को

भावपूर्ण श्रद्धांजलि..!

(वृत्तान्त पृष्ठ १३ पर)

महाराष्ट्र सभा द्वारा दिवंगत शास्त्री दम्पती का ९ मार्च २०१४ को सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाशजी आर्य के करकमलों से अभिनन्दन सम्पन्न हुआ था।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२१ कलि संवत् ५१२१ विक्रम संवत् २०७७
दयानन्दाब्द १९६ मार्गशीर्ष/पौष १० जनवरी २०२१

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७), **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६),
ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०), **राजवीर शास्त्री**(९८२२९९००११)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) सम्पादकीयम् (जागृत हो राष्ट्रभावना)..... ०५
३) नववर्ष कब मनाये ? ०७
४) न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे..... ०९
५) स्मृतिशेष पण्डित सुधाकरजी शास्त्री १३

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १५
२) आर्य व्यक्तिमत्व स्व.सत्येन्द्रजी चिंचोलीकर..... १६
३) मराठी मनुस्मृतीचे प्रकाशन..... १८
४) स्वामी श्रद्धानंदजींचा १०३ वा जन्म दिवस..... २०
५) वार्ताविशेष २२
६) शोक वार्ता २२

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ-४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रू.१००/-
आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

विद्वानों के कर्त्तव्य..!

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि।
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः।।

(ऋ.३/३०/१)

पदार्थान्वय– हे (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्य के दाता! जो (**सोम्यासः**) परस्पर स्नेह रस के वर्द्धक (**सखायः**) मित्रभाव से वर्तमान (**त्वा**) आपकी (**इच्छन्ति**) इच्छा करते हैं, वे (**सोमम्**) परम ऐश्वर्य को (**सुन्वन्ति**) सिद्ध करते (**प्रयांसि**) कामना करने योग्य वस्तुओं को (**दधति**) धारणा करते और (**जनानाम्**) मनुष्य लोगों की (**अभिशस्तिम्**) चारों ओर से हिंसा को (**आ**) (**तितिक्षन्ते**) सहते हैं (**हि**) जिससे (**त्वत्**)आप से अन्य (**कः**)(**चन**) कोई भी पुरुष (**प्रकेतः**) उत्तम बुद्धि वाला नहीं है इस से इन मनुष्य की सर्वदा रक्षा कीजिए।

भावार्थ – जो लोग परस्पर मित्रभाव से वर्त्ताव करते हुए प्रयत्न के साथ ऐश्वर्य की इच्छा करते हैं, वे सुख-दुःख, निन्दा आदि को सहकर और विद्वानों का संग करके आनन्द को बढावें।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

त्रैमासिक अंतरंग बैठक-सूचना

प्रान्तीय सभा के अंतरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि, सभा के अंतरंग सदस्यों की त्रैमासिक बैठक आगामी २४ जनवरी २०२१ को परली में आयोजित की गयी है। सभाप्रधान श्री योगमुनिजी की अध्यक्षता में यह बैठक संपन्न होगी। कोरोना लॉकडाऊन के कारण मध्यकाल में सभा के पदाधिकारी व अंतरंग सदस्यों का प्रत्यक्ष विचारविनिमय हो नहीं पाया। अतः इस बैठक में सभी सम्मिलित होकर निश्चित किये गये विभिन्न विषयों पर चर्चा व विचारविमर्श करें।

बैठक रविवार दि.२४ जनवरी २०२१ – प्रातः ११ बजे

स्थान : आर्य समाज, परली–वैजनाथ जि.बीड

सम्पादकीय

जागृत हो 'राष्ट्रभावना'...!

विश्व का सबसे बडा प्रजातांत्रिक राष्ट्र 'भारतवर्ष' अपना ७२ वा गणतन्त्र दिवस मनाने जा रहा है। अपने मताधिकार के प्रयोग से यहाँ अपनी सरकार चुनने का मौलिक कार्य प्रजा करती है। इससे जनशक्ति के महत्त्व का पता चलता है। लेकिन क्या सरकार बनाकर हम अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हुए हैं? सत्तासीन नेताओं व प्रशासकीय अधिकारियों पर देश चलाने का भार सौंपकर हम देशवासी आराम से निद्राधीन होते रहेंगें, तब इससे क्या मतलब रहा? विगत ७१ वर्षों में प्राय: यही देखा गया है। एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में देश के बारे में सोचना या कुछ करना क्या हमारा कर्तव्य नहीं है? राष्ट्र के निर्माण में किसी एक की नहीं, बल्कि सभी की जिम्मेदारी होती है। राष्ट्ररथ तभी आगे बढता रहता है, जब इसके सभी पहिये इसे एकसमान गति से आगे खिंचते रहेंगें। छोटे से व्यक्ति से लेकर बडे नेताओं तक का कर्तव्य है कि हम अपने राष्ट्रहित को अग्रक्रम देते हुए इसकी सर्वांगिण उन्नति के विषय में सोंचें। मनसा-वाचा-कर्मणा एकजुट होकर इसे आगे बढाते रहें। क्योंकि जहां पर हम उत्पन्न हुए, वह धरती हमारी माता है और इसपर रहनेवाले हम सभी इसके पुत्र हैं। जब हम सबकी एकही धरती(राष्ट्र) माता है, तब हम सभी नागरिकों का नाता तो परस्पर भाई-भाई, बहन-बहन जैसा हो गया। वेद में समग्र पृथ्वी को ही माता कहा है-'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।'(अथर्व.१२/१/१२)

भूमि को छोडे, कम से कम अपने देश को तो 'मां' के रूप में देखें! जब हम देशवासियों के मन में अपनी राष्ट्रमाता के प्रति सुरक्षा, सम्मान, संवर्धन या समृद्धि की भावना सदैव जागृत होती रहेगी, तब यहां किसी बात की कमी न होगी। किसी भी प्रकार का रुदन न होगा। अन्याय, अत्याचार, आतंक या भय का वातावरण नही होगा। इसके लिए आवश्यकता है, हम अपने साम्प्रदायिक, प्रान्तिक, भाषिक मतभेदों को भूलाकर अपनी भारतमाता के विषय में सोंचते रहे। लेकिन इस प्रकार की सोच आज कहां देखने मिलती है ? यहाँ तो अपना सगा-सम्बन्धी, रक्त का भाई भी शत्रु बन गया है। किसी के प्रति कोई स्नेहभाव नहीं रहा। 'मैं, मेरा परिवार और हमारा स्वार्थ' इसी में हर एक जुटा है। सभी को चिंता लगी है कि, मेरा क्या होगा? सिर्फ मैं सुखी बनूं, पडोसी व अन्यों से मुझे क्या लेना-देना? जैसे-तैसे सबकुछ मुझे ही मिलना चाहिये। इस निजी क्षुद्र वृत्ति ने हर एक के मन में आसन जमा लिया है। अखबारों में छपनेवाली और टीवी पर दिखाई देनेवाली अविद्या, अज्ञान, अत्याचारों के प्रभाव से घटित

दुर्घटनाओं को जानकर हम कुछ समय के लए स्तब्ध तो होते हैं और करुणा व दुखभरे एक-दो शब्द भी कहते हैं। तो क्या इसी में ही हमारी इतिकर्तव्यता सिद्ध होगी? हमारे हृदय में यदि अपने इस राष्ट्ररूप घर-परिवार के प्रति कुछ करने की आकांक्षा नहीं होगी, तो कुछ फायदा नहीं होगा।

आज हम अपने ही गौरवशाली राष्ट्र में एक ऐसी (अ)व्यवस्था का अनुभव कर रहे हैं, जिसमें राष्ट्रीय व सामाजिक कर्तव्य भावनाओं का सर्वथा अभाव ही अभाव है। यहाँ की जनता ने 'स्व' का संकुचित दायरा विस्तीर्ण बनाया है। 'यह भूमि, राष्ट्र व यह समाज मेरा है', यह सद्भाव कहीं पर भी दिखाई नहीं देता। 'तू तेरा... मैं मेरा' की संकीर्णता ने हर एक के मन को इतना आच्छादित किया कि राष्ट्र व समाज के उन्नति-अवनति के विषय में किसी को कोई चिन्ता नहीं है...! इस देश में सम्प्रति धनवानों, बुद्धिमानों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, राजनीतियों व शिक्षाविदों की कोई कमी नहीं है। सभी के पास भौतिक संसाधन व आर्थिक सुबत्ता बडे पैमाने पर है। लेकिन समाज व राष्ट्रहित में दूरदर्शिता एवं सुचिंतन करनेवालों की संख्या बहुत कम है। जब तक हम राष्ट्ररूप माता के प्रति सच्चे पुत्र के कर्तव्य निभाने हेतु आगे कदम नहीं बढायेंगें, तब तक हमारा सारा वैभव किसी काम का नहीं है। यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र है -

'यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानत:।
तत्र को मोह: क: शोक एकत्वमनुपश्यत:।।'

जिस उच्च व्यापक अवस्था में हम सभी लोग धरती के समस्त प्राणियों/मानवों को अपनी आत्मा के तुल्य समझने व देखने लगेंगें, उस समय समान दृष्टिवाले हममें किसी प्रकार के मोह या शोक की भावना नहीं रहेगी। या उनसे निर्मित समस्याओं का पूर्णत: अभाव होगा। हममें 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।' अर्थात् एक दूसरों को मित्रता की दृष्टि से देखने की भावना बढती जायेगी। आज इस विशाल, व्यापक व उदात्त दृष्टिकोन को अपनाने की आवश्यकता है। अथर्ववेद के भूमिसूक्त में राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने हेतु जिन तत्त्वों का उल्लेख मिलता है, उनमें 'राष्ट्रं बलमोजश्च...।' अर्थात् राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय बल एवं राष्ट्र के ओज (प्रभाव) का भी वर्णन आता है। जब हममें अपनेही देश को या उसके सार्वजनिक सम्पत्ति को अपना समझने की भावना दृढ होगी, तब निश्चित रूप से हम इसके सच्चे नागरिक पुत्र कहलाने के अधिकारी होंगें। अन्यथा कर्तव्यहीनता के दुष्परिणाम हम सभी की सर्वोन्नति में अडसर बनेंगें।

***

- नयनकुमार आचार्य

नववर्ष कब मनाये ...?

– राकेश श्रीराम

आज से १,९६,०८,५३,१२१ वर्ष एवं २६० दिन पूर्व इस सृष्टि में अनेक मानव (युवक –युवतियां) की उत्पत्ति भूमि से हुई थी , सृस्टि की आयु ४३२ करोड़ वर्ष होती है । पहली बार भूमि से पैदा होने वाले सभी मानव ऋषि कोटि के होते हैं । इस प्रकार हम सभी ऋषियों की संतानें हैं । जब हमारे पूर्वज भूमि से पैदा होते हैं, तभी हम भूमि को भूमि माता भी कहते हैं एवं परम पिता केवल ईश्वर को कहते है । मानव की उत्पत्ति से पूर्व इस सृष्टि में सभी पेड़ –पौधे एवं समस्त प्राणी जगत् की उत्पत्ति हो चुकी थी । जिस दिन सृष्टि में मानव की उत्पत्ति होती है, वह दिन चैत्र मास प्रथमपदा होता है , इसीलिए चैत्र मास प्रतिपदा से नये वर्ष का शुरुआत होती हे । एक जनवरी से कदापि नहीं।

जब मानव की उत्पत्ति होती है, उस समय ना ज्यादा ठंड होती और ना ही ज्यादा गर्मी होती है, क्योंकि नग्न एवं युवावस्था में पहली बार अनेक युवक – युवतियां भूमि से पैदा होते है । यदि ज्यादा ठंड या गर्मी होगी तो मानव पैदा होते ही बीमार हो सकता है ।

मानव उत्पत्ति के प्रथम दिन ही परमपिता परमेश्वर चार ऋषियों (अग्नि ,वायु, आदित्य, अंगिरा) को मानव के लिए पूर्ण ज्ञान दे देता है। ये चारों ऋषि यह ज्ञान परमपिता परमेश्वर के आशीर्वाद से ब्रह्मांड से परा– पश्यन्ति वाणी में ग्रहण करते हैं । इस ज्ञान को कोई भी मानव आज भी अष्टांग योग पालन करने वाला योगी /ऋषि परा– पश्यन्ति वाणी में सुन सकता है । इसी तरह आज से लगभग ६५०० वर्ष पहले महर्षि ऐतरेय महिदास जी ने भी कुछ ज्ञान लिया था । मानव उत्पत्ति के प्रथम दिन कृषि कार्य , चिकित्सा , मानवीय रिश्तों का ज्ञान (माता –पिता, भाई –बहन, चाचा– चाची, ताई –ताऊ, बाबा दादी ,मामा, नाना आदि) , शादी , सभी कुटीर उद्योग , घर बनाने का पूर्ण विज्ञान, भोजन बनाने का पूर्ण विज्ञान आदि ज्ञान दे देता है एवं सभी फसले तैयार थी, जिसमे कपास भी थी। उन्होंने कुछ ही दिनों में वस्त्र तैयार कर धारण कर लिए थे । पहला दिन ज्ञान की चरमावस्था होती है।

ज्ञान वही है जिससे समस्त प्राणिजगत् का कल्याण होता हो ,बाकि सभी अज्ञान है । इन चारों ऋषियों को चारो वेद का ज्ञान क्रमशः प्राप्त हुआ है। अग्नि को ऋग्वेद का , वायु को यजुर्वेद

का, आदित्य को सामवेद का, एवं अंगिरा को अथर्ववेद का ज्ञान प्राप्त हुआ। फिर इन चारों ऋषियों ने चारों वेदों का यह ज्ञान ऋषि ब्रह्मा जी को प्रदान किया । इस तरह ज्ञान की परंपरा गुरु- शिष्य परंपरा के तहत आगे बढ़ती चली आती है। अंग्रेजो ने तो हमारी बहन- बेटियो के साथ बहुत अत्याचार किए हैं एवं हमारे क्रांतिकारियों को फांसी पर चढ़ाया है और हमारे पूर्वजों पर बहुत अधिक अत्याचार किए हैं। ईसा मसीह का जन्म २५ दिसंबर को हुआ था, उसका खतना ८ दिन बाद १ जनवरी को हुआ था। फिर क्यों हम ईसा मसीह के खतने के पर्व को नववर्ष के रूप में क्यों मनाये ? मेरे मत में जिस दिन इस सृष्टि में मानव का पदार्पण होता है, उसी दिन नव वर्ष मनाना चाहिए। अर्थात गुड़ी पाड़वा को (२०२१ में १३ अप्रैल को)। निर्णय आपका है .....!

ए-१४, बिझनेस पार्क, सिल्वर स्प्रिंग, बायपास रोड, इंदौर(म.प्र.)
मो.९९२६१८५००१

बहुप्रतीक्षित 'मराठी-विशुद्ध मनुस्मृति' का प्रकाशन

विगत कई वर्षों से प्रबुद्ध पाठकों एवं बुद्धिजीवियों को जिसकी प्रतीक्षा थी, विशेषकर मराठी भाषिक अभ्यासक कई दिनों से जिसके इन्तजार में थे, वह 'विशुद्ध मनुस्मृति' (मराठी) ग्रन्थ अब छपकर तैयार है। विख्यात संशोधक, समीक्षक, गवेषक-वैदिक विद्वान् डॉ.सुनेन्द्रकुमार जी (पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार एवं सम्पादक, परोपकारी पाक्षिक) द्वारा संशोधित/सम्पादित इस विशालकाय ग्रन्थ का मराठी भाषा में अनुवाद उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) के प्रसिद्ध आर्यलेखक प्राचार्य श्री गोविन्द घन:श्याम मैन्दरकरजी ने अथक परिश्रम से किया है।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा अंतर्गत 'स्व.माता शान्तिदेवी मायर (लन्दन) स्मृति-मानव निर्माण व सेवा सहायता समिती' द्वारा इस प्रकाशित इस बृहद् ग्रन्थ की पृष्ठसंख्या ७२० है। इसे लातूर की प्रिंट पॅक संस्था ने मुद्रित किया है। इस ग्रंथ की प्रस्तावना तपस्वी आर्य संगठक व सभा के संरक्षक श्री डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने लिखी है। प्रकाशकीय शब्द सभामंत्री श्री राजेन्द्रजी दिवे ने प्रदान किये है। डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी के संशोधकीय मनोगत है एवं अनुकर्त्ता प्राचार्य श्री मैन्दरकरजी अनुवादकीय मन्तव्य हैं। यह ग्रन्थ सभाद्वारा महाराष्ट्र के विद्वानों, बुद्धिजीवियों, ग्रन्थालयों को नि:शुल्क भेट दिया जा रहा है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन अवसर पर समीक्षक, अनुवादक एवं प्रकाशकों का अभिनन्दन!

स्मृतिदिवस (१६ जनवरी) पर शतशः नमन!

म.दयानन्द के उदारमतवादी सहयोगी

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे

–स्मृतिशेष डॉ.कुशलदेव शास्त्री

उन्नीसवीं शताब्दी के महाराष्ट्रीय समाजसुधारकों की यह उल्लेखनीय विशेषता रही है कि परस्पर वैचारिक मत-भेद होते हुए भी वे जिन विषयों पर सहमत होते थे, एक दूसरे की अनन्य भाव से सहायता करते थे। प्रार्थना समाजियों तथा सत्यशोधक समाजियों में विभिन्न विषयों पर प्रतिकूल मत रहते हुए भी एकत्रित हो, मिलकर कार्य करने की भावना विद्यमान थी। इसी समन्वशील प्रवृत्ति के कारण ही प्रार्थना समाज के संस्थापक न्यायमूर्ति रानडे ने अपने सहयोगी शिष्यों के साथ आर्य समाज के संस्थापक म.दयानन्द सरस्वती की 'पुणे व्याख्यानमाला' का आयोजन किया था।

न्यायमूर्ति श्री महादेव(माधवराव) गोविंद रानडे (१८४२-१९०१) को कौन नहीं जानता? राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय उत्कर्ष में उनका असधारण एवं अविस्मरणीय योगदान रहा है। काँग्रेस का **'नेशनल काँग्रेस'** नामकरण रानडेजी ने ही किया था। आपको राष्ट्रीय जन-जागृति का जन्मदाता भी कहा जाता है। महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा को महात्मा गाँधी तक लाने-पहुँचाने का श्रेय भी आपको दिया जाता है। माधवराव गोविन्द रानडे ये महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना गुरु मानते थे और गोपालकृष्ण गोखले न्यायमूर्ति रानडे को अपना गुरु मानते थे, तथा लोकसेवक गोखले को महात्मा गांधी अपना गुरु मानते थे। इसी आधार पर कुछ समीक्षकों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को **'राष्ट्र प्रपितामह'** कहा है। महर्षि दयानन्द को पुणे निमंत्रित करनेवालों में न्यायमूर्ति रानडे का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। महर्षि ने भी अपने पत्र में 'पुणे प्रवचन' के व्यवस्थापक एवं प्रकाशकों में सर्वप्रथम मा.गो.रानडे का ही उल्लेख किया है। पुणे के बुधवार पेठ-भिडेवाडा में सम्पन्न पन्द्रह प्रवचनों का आयोजन एवं प्रकाशन उन्हीं के नेतृत्व में हुआ था। सनातनी तथा प्रतिगामी शक्तियों के विरोध की परवाह न करते हुए बडे धैर्य के साथ आप स्वामीजी की शोभायात्रा में सम्मिलित हुए थे। शोभायात्रा से जब घर लौटे तो आपके कपडों पर कीचड के धब्बे नजर आ रहे थे। घरवालों ने कारण पूछा, तो आपने उत्तर दिया कि- 'जब मैं सबके साथ था, तो मुझे भी यह प्रसाद मिलना

स्वाभाविक ही था।' शोभायात्रा को साहस एवं धैर्य के साथ सम्पन्न कराने में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। शोभायात्रा के पश्चात् भिडेवाडा में सम्पन्न स्वागत समारोह में न्यायमूर्ति रानडे ने महर्षि को हार्दिक धन्यवाद दिया। साथ ही अपने अनुयायी-सहयोगियों की ओर से प्रतिमास या प्रतिवर्ष महर्षि के निर्देशानुसार वेदभाष्य लिपिबद्धकर्त्ता को पचास रूपये देने का अभिवचन भी दिया। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित-विश्व की तीसरी **'आर्य समाज'** पुणे के ही न्यायमूर्ति रानडे प्रधान निर्वाचित हुए थे। सुप्रसिद्ध इतिहास-लेखक श्री हरिदत्त वेदालङ्कार के अनुसार- 'श्री रानडेजी ने आर्यसमाज मुंबई में अनेक व्याख्यान दिए तथा उनके प्रभाव के कारण सुधारवादी नवयुवक आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए थे।'

परमदेशहितैषी रानडे महर्षि के विश्वासपात्र व्यक्तियों में से थे। महर्षि ने उन्हें अपनी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी-परोपकारिणी सभा के सभासद के रूप में नियुक्त किया था। रानडेजी इस सभा के सक्रिय सभासद् थे। महर्षि दयानन्दजी के बलिदान के पश्चात् दि.२१ दिसम्बर १८८३ को सम्पन्न परोपकारिणी सभा की बैठक में श्री माधवराव रानडेजी ने देश की सभी आर्यसमाजों को परोपकारिणी सभा से संलग्न करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। स्वामी दयानन्दजी सरस्वती के स्मृत्यर्थ 'दयानन्द आश्रम' की स्थापना करके पुस्तकालय, वैदिक पाठशाला, पुस्तक विक्री भण्डार, अनाथाश्रम, अद्भुत-वस्तु-संग्रहालय, यन्त्रालय, सभागृह आदि विविध विभागों को स्थापित और संचालित करने का प्रस्ताव भी २१ दिसम्बर १८८३ की परोपकारिणी सभा में आपने ही रखा था।महर्षि दयानन्द से न्यायमूर्ति रानडे १८ वर्ष छोटे थे। आपकी स्वदेशप्रेम की भावना से महर्षि सुपरिचित थे, इसीलिए उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि - 'श्री रानडेजी का दृष्टिकोण हमेशा देशहित की ओर था।'

रानडेजी जैसे समर्थ सहयोगी मिलने के बावजूद भी पुणे का आर्यसमाज चिरस्थायी क्यों नही हो सका?यह एक विचारणीय व चिंतनीय प्रश्न है। महर्षि दयानन्द के समकालीन व पुणे के पौराणिक साहित्यकार विष्णु शास्त्री चिपळूणकर के अनुसार - 'स्थापना काल के पश्चात् दयानन्द द्वारा स्थापित पुणे आर्य समाज का लगभग डेढ-दो वर्ष की अल्पावधि में दो-तीन बार पुनरुद्धार किया गया। तदनन्तर अन्त में वह 'आर्य धर्म विवेचन सभा' के रूप में रुपान्तरित होकर नामशेष हो गया।' पुणे आर्य समाज के स्वल्पजीवी

होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि- महर्षि दयानन्द के न्यायमूर्ति रानडे आदि अनुयायी महर्षि की तरह सुदृढ वेद भक्त नहीं थे। न्यायमूर्ति अन्तिम समय तक प्रथम स्तरीय प्रार्थनासमाजी रहे बाद में और कुछ! यह बात भी निर्विवाद है कि न्यायमूर्ति रानडे आर्यसमाजी प्रचारकों को अन्तिम समय तक सहयोग देते रहे।

श्रीयुत रानडेजी ने कम्बाला हिल मुम्बई से १६ अक्तूबर १८९४ को लिखे अपने एक पत्र में स्वामी नित्यानन्दजी और स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी को मद्रास-प्रेसिडेन्सी के निम्नलिखित ९ व्यक्तियों के नाम लिखे, जो स्वामीजी के कार्य में सहायक हो सकते थे - १) टी.रामचन्द्र अय्यर(द्वितीय न्यायाधीश चीफ कोर्ट बंगलौर), २) टी.नरसिंह अय्यंगर(दरबार बख्शी मैसूर), ३) दीवान बहादुर रघुनाथराव (कुम्भकोणम्), ४)माननीय रायबहादुर (सभापति मुदालियर बेलारी), ५) श्री जी.सुब्रह्मण्य अय्यर(सम्पादक हिन्दू, मद्रास), ६) माननीय सुब्रह्मण्य अय्यर (प्लीडर हाईकोर्ट मद्रास), ७) माननीय शंकर नायक (प्लीडर हाईकोर्ट, मद्रास), ८) श्री बलवन्तराय सहस्त्रबुद्धे (मिलिटरी फाइनेन्स सुपरिणटेण्डेण्ट ट्रिप्लिकेन मद्रास), ९) श्री विजय राघवचारलु(प्लीडर डिस्ट्रिक्ट कोर्ट सलेम)। ये सब महानुभाव मद्रास प्रान्त के विभिन्न स्थानों के सुप्रसिद्ध एवं सुप्रतिष्ठित नेता थे। जनता इन्हें बडे सम्मान की दृष्टि से देखती थी। ये सभी बडे शिक्षा-सम्पन्न, उदार एवं सुधारवादी विचारों के व्यक्ति थे और रानडे महोदय को पूरी आशा थी कि इनके सहयोग से मद्रास में स्वामी नित्यानन्दजी का प्रचार-कार्य भली-भाँति सम्पन्न हो सकेगा।

श्री रानडे महोदय ने इस पत्र के साथ स्वामीजी को एक सार्वजनिक परिचय-पत्र भेजते हुए लिखा था-"इस पत्र को आप जिस-जिस स्थान पर जाएँ, वहाँ पत्र में उल्लिखित महानुभावों को दिखाने की कृपा करें। मद्रास प्रान्त में पहुँचने के बाद आप अपनी सुविधानुसार विभिन्न स्थानों पर अधिक-से-अधिक समय लगाएँ।" इस पत्र के साथ भेजे गए परिचय-पत्र में रानडे महोदय ने लिखा था कि, "ब्रह्मचारी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रभावशाली प्रचारक हैं। यह संस्था पण्डित दयानन्द सरस्वती द्वारा लगभग २० वर्ष पहले स्थापित की गई थी। उत्तर-भारत में, विशेषकर पंजाब में आर्यमसजों की संख्या १५० है। इस संस्था ने वहाँ अपना सुदृढ स्थान बना लिया है। दुर्भाग्यवश लगभग १० वर्ष पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती.. परलोक चले गए। उनके कुछ शिष्यों और अनुयायियों ने उनके द्वारा प्रारम्भ किये हुए कार्य को पूरा करने

का भार अपने ऊपर ले लिया है। इनमें ब्रह्मचारी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द निश्चित रूप से सबसे अधिक योग्य हैं। वे दोनों संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं और श्री नित्यानन्दजी अंग्रेजी भी जानते हैं। क्योंकि मद्रास प्रान्त में आर्यसमाज के उपदेशकों का दौरा नहीं हुआ है, मैंने उनसे प्रस्ताव किया है कि वे इस प्रान्त में भ्रमण करें और मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने बेंगलौर जाने के लिए समय निकाला है। उनका विचार मैसूर और उससे आगे मद्रास जाने का है। उनकी भाषण-शक्ति बहुत उच्चकोटि की है। मुझे पूरी आशा है कि वे अपना आशय शिक्षित समुदाय को समझा सकेंगें। आप उन्हें अत्यन्त प्रभावशाली उपदेशक समझेंगें। उनकी मित्रमण्डली उधर नहीं है। इसलिए मैंने यह परिचय-पत्र देने का साहस किया है। मैं आशा करता हूँ कि आपकी सहायता से उनका उद्देश सफल होगा।''

इससे सात वर्ष पूर्व सन् १८८७ में येवला आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर चार हजार से भी अधिक खचाखच भरे जनसमूह के समक्ष 'आर्य और अनार्य' विषय पर डेढ घण्टे तक अपना अध्यक्षीय भाषण देने के उपरान्त न्या.रानडेजी ने कहा- 'मुझपर आर्यसमाज का बहुत उपकार है। स्वामीजी मुझसे अत्यन्त प्रेम रखते थे और मैं भी उन्हें आदर की दृष्टि से देखता था। मैं परोपकारिणी सभा का मेम्बर हूँ। स्वामीजी के परिश्रम का फल पंजाब में अच्छा हुआ है। मुझे यहाँ पर आर्यसमाज को देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ है।'

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडेजी द्वारा महर्षि को दी गई यह श्रद्धांजलि अविस्मरणीय है, जिसमें उन्होंने कहा था- **''महर्षि दयानन्द में धार्मिक उत्साह भरा हुआ था। उनमें वीरोचित कर्मण्यता की भावना विद्यमान थी, जिसकी उत्पत्ति इस विश्वास से हुई थी कि कोई उच्च सत्ता मेरे कार्य का संरक्षण कर रही हैं।** समय की आवश्यकताओं को देखने की उन्हें जो सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त थी, वह अलभ्य थी। उसमें लक्ष्य सिद्धि की दृढता ऐसी अटूट थी कि कोई भी विपत्ति व प्रतिकूलता उसे झुका न सकती थी। उन जैसी तत्परता और साधन-सम्पन्नता विरलों को ही प्राप्त होती है। उनकी सच्ची देशनिष्ठा समय से कहीं आगे बढी हुई थी। दया से द्रवित उनकी न्याय भावना देखते ही बनती थी। यही सब गुण और विशेषताएँ उनकी शक्ति की स्त्रोत थीं, जिन्होंने उन्हें आर्य समाज जैसे महान् आन्दोलन को संचालित करने में समर्थ बनाया था।''

(स्मृतिशेष डॉ.कुशलदेव शास्त्री कृत 'महर्षि दयानन्द काल व कर्तृत्व' से साभार) ***

महाराष्ट्र वैदिक धर्म प्रचारक

स्मृतिशेष पंडित सुधाकरजी शास्त्री

– प्रा.अरुण चव्हाण

वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करने में प्रभावशाली प्रचारक का होना अत्यावश्यक होता है। सिवाय इसके नगर व देहातों में वेदधर्म को फैलाना कैसे संभव हो पाता है ? इसीलिए तो जनसमूह की भाषा में बोलने वाला प्रचारक उस आर्य संगठन या आर्य समाज का प्रमुख शक्तिस्थल माना जाता है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा गत कई वर्षों से दृष्टि से प्रयत्नशील रही है। सभा के वेद प्रचारक , उपदेशक स्मृतिशेष पंडित सुधाकर शास्त्रीजी ने लगभग बीस वर्षों तक यह कार्य बड़ी लगन से किया है । महाराष्ट्र के लगभग सभी देहातों में पहुंचकर अपने प्रभावशाली मराठी वक्तव्य द्वारा उन्होंने सामान्य लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ने का जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, उसे हम कभी भुला नहीं पाएंगें। गत माह १८ नवम्बर को अल्प सी बीमारी के कारण उनका निधन हो गया। उनका अकस्मात संसार से चले जाना आर्य समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति मानी जाएगी। विशेषकर महाराष्ट्र के मराठी भाषियों को वैदिक बिचारधारा से अवगत कराने में वे काफी सफल रहे थे । वैदिक संस्कार या कोई कर्मकांड , चाहे विवाह हो या अन्य प्रचार के कार्यक्रम ! लोग उन्हें ही बुलाना पसंद करते थे। आर्यजनों की इच्छा रहती थी की शास्त्रीजी के पौरोहित्य में ही विवाह संस्कार आदि कार्यक्रम संपन्न हो ! सभा के वेदप्रचार कार्य में भी आपका पूरा सहयोग था । राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार , छात्रों के लिए वैदिक व्याख्यानमाला, मानवता संस्कार एवं आर्य वीरदल शिविर, पुरोहित प्रशिक्षण शिविर, स्वास्थ्य रक्षा शिविर आदि प्रमुख उपक्रमों में आप प्रमुख व्याख्याता एवं पुरोहित की भूमिका बड़ी सफलता के साथ निभाते थे। जब भी कार्यक्रम हेतु विभिन्न स्थानों पर पहुंचते थे, तब प्रान्तीय सभा के 'प्रतिनिधि' के रूप में आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का संगठन व मनोबल बढ़ाना, नए लोगों को आर्य समाज से जोड़ना, स्थानीय विवाद निपटाना तथा नई कार्यकारिणी का गठन करना आदि कार्य आप करते रहे।

क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों तथा पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी जैसे महान समाजसेवियों व मुनिजनों के पावन जन्मों से पुनीत हुई औराद (गुंजोटी) में १८

अगस्त १९५८ को माता रुक्मिणी देवी व पिता महादेव विभूते इस कृषक दंपती के घर शास्त्री का जन्म हुआ। आरंभिक शिक्षा के पश्चात दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई समीपस्थ गुंजोटी के श्रीकृष्ण विद्यालय में पूर्ण हुई । तत्पश्चात् अपने पूज्य चाचा श्री अन्नारावजी पाटिल (वर्तमान के विज्ञानमुनिजी) की प्रेरणा से वे संस्कृतविद्या ग्रहण करने तथा उपदेशक बनने के लिए दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) पहुंचे। चार वर्षों तक आचार्य सत्यप्रियजी शास्त्री एवं पितातुल्य भ्राता पं . विश्वामित्रजी शास्त्री के सान्निध्य में रहकर आपने वैदिक सिद्धांत, संस्कृत साहित्य , सोलह संस्कार एवं ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन कर जीवन को यशस्वी बनाया। वहीं पर विद्यावाचस्पति एवं शास्त्री की उपाधियां ग्रहण कर आप आर्य समाज फतेहाबाद (हरियाणा) में अवैतनिक पुरोहित के रूप में लगभग १६ वर्षों तक अपनी सेवाएं दी । इस संस्था से जुड़कर आप अध्यापक, प्रचारक आदि अनेक रूपों में कार्य करते रहे।

वैदिक सिद्धांतों को आपने अपने व्यक्तिगत जीवन का अंग बनाया था। पू.गुरुजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) की प्रेरणा से श्री नामदेवराव पाखरसांगवे (निलंगा) की कन्या शोभादेवी से सन १९८८ में आपका अन्तर्जातीय विवाह हुआ। इस तरह आपने वेदप्रतिपादित मानव जाति के सिद्धांत को प्रत्यक्ष कृति में उतारा था।

श्री शास्त्रीजी महाराष्ट्र के विभिन्न देहातों में जाकर आप पौरोहित्य वेदप्रचार आदि करते रहे। उनके वेदप्रचारादि कार्यों व योगदान हेतु महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने दि.९ मार्च २०१४ को परली के श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में आयोजित भव्य समारोह में उनका अभिनन्दन किया। सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा के मन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य के शुभ करकमलों से गौरवपत्र प्रदानकर उन्हें सन्मानित किया गया। सभा के संरक्षक पू.डॉ.ब्रह्ममुनिजी का शास्त्रीजी पर विशेष स्नेह एवं सहयोग रहा है। गत् ४-५ वर्षों से आप अपने बच्चों व परिवार के साथ पुणे में ही निवास कर रहे थे। दुर्भाग्य से गत ३ वर्ष पूर्व ही उनकी सहधर्मचारिणी सौ.शोभादेवी का अल्पसी बिमारी के कारण दु:खद निधन हुआ। अब शास्त्रीजी के भी चले जाने से परिवार पर दु:ख एवं संकट की छाया है। ऐसी बिकट अवस्था में परमात्मा परिजनों को यह दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें।दिवंगत शास्त्रीजी को श्रद्धांजलि!

- 'अनुव्रत सदन', शारदा नगर, परली-वै. जि.बीड मो.९८९०३५५३४९

॥ओ३म्॥

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

अन्य कोणताही मार्ग नाही!

एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये स एवाग्नि: सलिले सन्निविष्ट:।
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्य:पन्था विद्यतेऽयनाय।।(श्वेताश्वेतर उ.६/१५)

अर्थ – या अनंत अशा ब्रह्मांडामध्ये अविद्यादी अंध:कारापासून सर्वदृष्ट्या वेगळा असणारा तो सर्वात श्रेष्ठ असा एकच परमेश्वर आहे. तोच अविद्यादीच्या दाहक दोषांना सर्व प्रकारे नाहीसे करणारा अग्नी बनून धुके इत्यादींप्रमाणे जलरुपाने परिणामाला प्राप्त होत प्रलयकाळच्या सूक्ष्म अवस्थेतील पाण्यात अग्नीप्रमाणे प्रवेश करून राहतो. त्याला जाणूनच जीव मृत्यूरूप भयापासून वाचू शकतो. परम पद (मोक्ष)प्राप्त करण्याकरिता याहून अन्य कोणताही मार्ग कदापी नाही.

* दयानंद वाणी *

'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथाचा उद्देश..!

पाच हजार वर्षांपूर्वी वैदिक धर्माशिवाय दुसरा कोणताही धर्म अस्तित्वात नव्हता, ही गोष्ट सिद्ध झालेली आहे. कारण वेदात सांगितलेल्या सर्व गोष्टी ज्ञानयुक्त आहेत. वेदांच्या उपदेशाकडे दुर्लक्ष केल्यामुळे महाभारत युद्ध झाले. वेदांकडे पाठ फिरविल्यामुळे जगात अविद्यारूपी अंधकार पसरला आणि माणसांची बुद्धी भ्रमिष्ट बनली. ज्याच्या मनात जे आले, त्याचाच त्याने पंथ बनविला.

या सर्व पंथांमध्ये चार पंथ प्रमुख असून त्यांतून इतर पंथांचा उगम झाला आहे. ते पंथ म्हणजे वेदांविरुद्ध असलेले १) पौराणिक (हिंदू) मत, २)जैन, ३)ख्रिस्ती व ४)इस्लामी मत हे होत. ते पंथ याच क्रमाने जगात प्रचलित झाले आहेत. या पंथांच्या शाखांची संख्या एक हजाराहून कमी नाही. या सर्व पंथांचे अनुयायी, त्यांचे चेले व इतर सर्व लोक यांना परस्पर सत्यासत्याचा विचार करण्याच्या बाबतीत अधिक कष्ट पडू नयेत, म्हणून हा ग्रंथ (सत्यार्थ प्रकाश) तयार करण्यात आला आहे.

आर्य समाज नांदेडचा 'हात तुटला'

आर्य व्यक्तिमत्त्व स्व.सत्येन्द्र चिंचोलीकर

– शंकर महाजन

आर्य समाज नांदेडच्या मंत्रीपदाची नुकतीच कांही वर्षांपूर्वी जबाबदारी स्वीकारलेली कर्तव्यदक्ष व उत्साही आर्य कार्यकर्ते व स्वामी रामदेव यांच्या किसान सेवा समितीचे नांदेड जिल्हा प्रभारी श्री सत्येन्द्रजी चिंचोलीकर यांचे दि.२८/१२/२०२० रोजी वयाच्या ५० व्या वर्षी हृदयविकाराने अकाली दु:खद निधन झाले. यामुळे आर्य समाज नांदेडसह त्यांच्या कुटुंबियावर फार मोठा काळाचा आघात झाला. या निमित्ताने त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वावर प्रकाश टाकत आहेत नांदेड आर्य समाजाचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते श्री शंकरराव महाजन.....!

नि:स्पृह, निगर्वी, हसता चेहरा, चैतन्याचे धनी, आर्य समाजाचे निष्ठावान, दयानंदाचे निस्सीम भक्त, शेतकऱ्यांचे हितैशी, मन मिळाऊ, प्रेमळ, कष्टी, सात्विक असे आपले आत्मज सत्येंद्रजी पाटील चिंचोलीकर आज आपल्यात नाहीत, हे खरंच वाटत नाही. फार मोठा आघात. फार मोठा धक्का. त्यांच्याबद्दल काय लिहावे, किती लिहावे? हे सुचत नाही. नांदेड आर्य समाजाचे ते आधार स्तंभ होते. ते आर्य समाजाचे मंत्री होते, ते कोणालाही सांगितल्याशिवाय कळंत नव्हते. त्यांच्या अंगी अहंपणाचा लवलेशही नव्हता. आर्य समाजाची झाडझूड, सफाई करण्यापासून ते येथे येणाऱ्या विद्वानांची सेवा करण्यापर्यंतची सर्व कामे अतिशय ममत्व भावनेने ते करायचे. महाभारतात महाराज युधिष्ठिरांच्या राजसूय यज्ञात योगेश्वर श्रीकृष्णांनी पत्रावळी जबाबदारी घेतली होती, तसेच सत्येंद्रजी यांचे काम होते. ते आर्य समाजाच्या कोणत्याही कार्यक्रम, शिबिर, यात्रा, भेट यासाठी त्यांच्या अर्धांगिनी सौ.लताताई समवेत सदैव तयार असायचे. प्रत्येक ठिकाणी त्यांची उपस्थिती हवीहवीशी वाटणारी होती. मिठाशिवाय भाजीलासुद्धा चव येत नाही, ती बेचव

लागते, तसेच सत्येंद्रजी व लताताईच्या जोडीशिवाय आम्हा सर्वांना वाटायचे. कोणत्याही कार्यक्रमात त्यांचा सात्विक पण महत्त्वाचा सहभाग असायचा. त्यांच्या निधनाने आर्य समाजाची, विशेषत: नांदेड आर्य समाजाची अपरिमित हानी झाली आहे. खूप कांही करायचे होते, ते राहून गेले. आपण निश्चितच आर्य समाजाचे कार्य करू, असे ते पोटतिडकीने म्हणायचे. ते आणि लताताई एका मनाने, एका विचाराने प्रेरित असल्यामुळे, त्यांच्या कामांमध्ये पवित्रता असायची. ताईंवर तर दु:खाचा डोंगरंच कोसळला आहे.

सत्येंद्रजी एक अत्यंत सहृदयी असे व्यक्तिमत्त्व होते. स्वामी रामदेव आणि पतंजली योग समितीचे ते सक्रिय कार्यकर्ते होते. सत्येंद्रजी व त्यांच्या धर्मपत्नी लताताई ही जोडी नेहमी लोकांमधे योगप्रचाराचे काम करण्यात व्यस्त असे. सर्व कार्यक्रमांचे करपत्रे वाटण्यापासून ते कार्यक्रम यशस्वी होईपर्यंत कोणतीही कामे जबाबदारीने करायचे. 'काम हे कामंच असते. काम हे लहान किंवा मोठं असं काही नसते', असे ते म्हणायचे. म्हणून कसलीही कामे करतांना त्यांना कधीही संकोच वाटला नाही. स्वामी रामदेवजी नांदेड़ला येणार होते. तर त्या संबंधीची माहिती देणारे पॉम्प्लेट्स गुजराती हायस्कूल येथील पालकांमधे वाटतांना मी लताताईंना पाहिले होते, तेंव्हा तर मला आश्चर्याचा आणि तितकाच आनंदाचा धक्का बसला. खरंच ताई आणि त्यांचे पती दिवंगत सत्येन्द्रजी दोघेही धन्य आहेत, असेच उद्गार माझ्या तोंडून बाहेर पडले. हे दांपत्य अनेक वर्षापासून आपल्या घरी दैनिक अग्निहोत्र करीत आहेत, हे समजल्यावर मला खरोखरच आनंद झाला. एका छोट्या खेड्यात राहणारे हे आर्य यजमान किती मोठे आणि महत्त्वाचे काम करताहेत, हे खरोखरच आर्य व्यक्तिमत्त्वाला शोभणारे आहे, तेंव्हा हे माझ्या लक्षात आले.

श्री सत्येंद्रजी हे नांदेड़ जिल्हा किसान सेवा समितीचे जिल्हा प्रभारी होते. ते त्यांच्या गाव व परिसरातील अडाणी, गोर गरीब शेतकऱ्यांना आवश्यक ती मदत नेहमीच करायचे. कर्जमाफीची कामे असोत की,बी-बियाणे वितरणाची कामे असोत! ते कोणाकडूनही कशाचीही अपेक्षा न बाळगता नि:स्वार्थ भावनेने प्रेरित होऊन कामे करीत व रात्रंदिवस त्यांच्यासाठी झटत. म्हणूनच त्या भागातील लोक श्री सत्येंद्रजींना 'देवमाणूस' म्हणतात. ते एक सच्चे आर्य होते. साधी राहणी हेच त्यांचे आभूषण होते. त्यांचा जनसंपर्क, आत्मीयता, सेवाभाव, चिकाटी यांसारख्या त्यांच्या अंगी असलेल्या सद्गुणांमुळेच ते

आर्यसमाज, पतंजली योगपीठ, किसान समिती सारख्या संस्थांमध्ये जीव ओतून काम करू शकले. श्री सत्येंद्रजी यांचे अचानक वयाच्या ७या वर्षात हृदयाघातामुळे दु:खद निधन झाले. त्यांच्या अकाली जाण्याने आम्ही सर्व व्याकुळ आहोत. सत्येंद्रजी मिळालेल्या थोड्याच आयुष्यात सत्कर्मच केले आहेत, त्यांना ईश्वर सद्गतीच देणार! त्यांची उणीव आम्हास नेहमीच भासत राहणार. त्यांच्या पावन स्मृति, कार्य व त्यांचा आदर्श हे आम्हास कायम प्रेरणा देत राहतील.

ताईंना व त्यांच्या परिवारास या दु:खातून सावरण्याची शक्ती त्यांना देवो, हीच ईश्वरचरणी प्रार्थना. सत्येंद्रजी गेल्यामुळे आमचा हात तुटल्यासारखे वाटत आहे. श्री सत्येंद्रजी यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली!

–'नभरम्य',
सह्याद्री नगर(चैतन्य नगर),
कॅनॉल रोड, तरोडा(बु.),
नांदेड मो.७७७५०६२२४४

ऐतिहासिक 'मराठी मनुस्मृती'चे प्रकाशन

'मनुस्मृतीच्या तत्त्वज्ञानाने मानवी मूल्यांचा प्रसार होईल' –स्वामी श्रद्धानंदजी.
'वैश्विक पातळीवर मनुस्मृतीचा विशुद्ध विचार रुजावा' –प्रा.

'मनुस्मृती हा मानवमात्रांचे सर्वांगीण कल्याण साधणारा फार जुना ग्रंथ आहे. हे वेदप्रतिपादित प्राचीन संविधान असून मूळ संस्कृतात असलेल्या या सर्वश्रेष्ठ ग्रंथात मोठ्या प्रमाणात अविचारांची भेसळ झाल्याने याविषयी जगात मोठे भ्रम निर्माण झाले. परिणामी सर्वत्र याचे निर्माते महर्षी मनू महाराजांविषयी अविश्वासाचे वातावरण पसरले. पण सभेने प्रकाशित केलेल्या डॉ. सुरेंद्रकुमारजी यांच्या 'विशुद्ध मनुस्मृती' या ग्रंथाच्या अनुवाद प्रकाशनामुळे विचारवंतांमध्ये असलेले भ्रमजाल दूर होतील आणि खऱ्या अर्थाने परिवार, समाज, राष्ट्र व वैश्विक कल्याण साधले जाईल, असे प्रतिपादन वयोवृद्ध तपस्वी संन्यासी पू.स्वामी श्रद्धानंदजी यांनी केले.

सभेतर्फे प्रकाशित करण्यात आलेल्या 'विशुद्ध मनुस्मृती'(मराठी) या ग्रंथाचे प्रकाशन नुकतेच श्री स्वामीजींच्या हस्ते झाले. कोरोना महामारी प्रादुर्भावाच्या पार्श्वभूमीवर हा प्रकाशन सोहळा लातूरात मोजक्या आर्य कार्यकर्त्यांच्या उपस्थितीत पार पडला. यावेळी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र

दिवे अध्यक्षस्थानी होते, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून निवृत्त उपप्राचार्य व भाषातज्ञ प्रा.ओमप्रकाशजी होळीकर (विद्यालंकार) हे होते. आपल्या भाषणात स्वामीजींनी मराठी मनुस्मृती उपलब्ध झाल्याबद्दल प्रकाशक व संपादक मंडळातील सर्व सदस्यांचे अभिनंदन केले.

प्रमुख पाहुणे प्रा. श्री ओमप्रकाश होळीकर यांनी मराठी भाषेतील विशुद्ध मनुस्मृती ग्रंथामुळे समाज व देशात पसरलेले चुकीचे गैरसमज नाहीसे होऊन आदर्श मानव समाज स्थापन होण्यास यामुळे मोलाची मदत मिळेल, अशी आशा व्यक्त केली. ते म्हणाले – भाषावैज्ञानिक दृष्टी, पदपाठ ,अर्थ ,संगती ,शैली यांचा अभ्यास योग्यरीत्या न झाल्याने आजपर्यंत मनुस्मृतीच्या बाबतीत मोठ्या प्रमाणात भ्रम निर्माण झाले. सुदैवाने प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सुरेंद्रकुमारजी यांनी अतिशय अभ्यासपूर्वक संशोधन केले आणि मूळ मनुस्मृतीतील प्रक्षिप्त श्लोक दूर सारून वेदानुकुल श्लोक विशुद्ध स्वरूपात जगासमोर आणले. या ग्रंथामुळे पुरोगामी समजल्या जाणाऱ्या महाराष्ट्रात आणि सबंध देशात महर्षि मनुप्रोक्त मानवतेचा विचार जोपासला जाईल आणि सर्व मानव एक होण्यास मदत मिळेल. महर्षी दयानंद यांनी देखील आपल्या सत्यार्थप्रकाश या ग्रंथात मनुस्मृतीतील वेदानुकूल श्लोकांचाच प्रमाण म्हणून मोठ्या प्रमाणात अंगिकार केला आहे. यावेळी त्यांनी या ग्रंथाच्या निर्मितीत योगदान देणाऱ्यांचे अभिनंदन केले.

अध्यक्षीय समारोपात सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांनी आजच्या युगात व्यक्तिगत जीवन विकास, पारिवारिक सुख समृद्धी ,सामाजिक सलोखा, वैश्विक शांतता निर्माण होण्याकरिता हा विशुद्ध मनुस्मृती ग्रंथ अतिशय उपयुक्त ठरेल, असे विचार मांडून या ग्रंथासाठी सभेचे संरक्षक डॉ.ब्रह्ममुनीजी व स्व.शांतीदेवी मायर सेवा सहाय्यता समितीचे योगदान मोठे असल्याचे सांगितले. तसेच अनुवादक प्राचार्य श्री गोविंद घन:श्याम मैंदरकर, संशोधक श्री ज्ञानकुमारजी आर्य व इतरांचे सहकार्य लाभल्याबद्दल त्यांचे आभार मानले.

यावेळी सभेचे पुस्तकाध्यक्ष श्री ज्ञानकुमारजी आर्य, सभेचे अंतरंग सदस्य व आर्य समाज रामनगर ,लातूरचे प्रधान श्री शंकररावजी मोरे, प्रांतीय आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे यांनीही आपले विचार मांडले. संचलन वैदिक गर्जनेचे संपादक डॉ नयनकुमार आचार्य यांनी केले. यावेळी श्री कानगुले, आर्यवीर हर्षवर्धन सूर्यवंशी, श्रीमती महानंदा सूर्यवंशी आदींची उपस्थिती होती.

स्वामी श्रद्धानंदांचा १०३ वा जन्मदिवस उत्साहात

'पू. गुरुजींमुळे नवा आदर्श समाज उदयास आला'

– माजी आ. श्री कव्हेकरांचे गौरवोद्गार

महाराष्ट्राच्या पावन भूमीत अनेक साधुसंतांनी व सुधारकांनी समाज व राष्ट्राच्या नवनिर्मितीत मोठे योगदान दिले आहे. याच परंपरेत अलीकडील काळातील समाज सुधारक व असंख्य विद्यार्थ्यांचे शिल्पकार पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी यांनी जीवनभर अनेक हालअपेष्टा सहन करीत विद्यार्थ्यांच्या भेटीगाठी घेऊन त्यांना निर्व्यसनी, सदाचारी व वेदमार्गी बनविले. म्हणूनच आज एक नवा मूल्याधिष्ठित आदर्श समाज उदयास आला आहे, असे गौरवोद्गार माजी आमदार श्री शिवाजीराव पाटील कव्हेकर यांनी काढले.

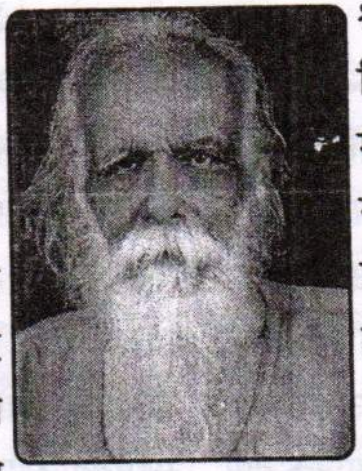

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व रामनगर आर्य समाजाच्या संयुक्त विद्यमाने लातूर येथे दि.२९ नोव्हेंबर २०२० रोजी पूज्य स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) यांचा १०३वा जन्मदिवस साजरा झाला. या निमित्त आयोजित गौरव कार्यक्रमात प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री कव्हेकर बोलत होते. अध्यक्षस्थानी या संस्थेचे प्रधान श्री शंकरराव मोरे हे होते. यावेळी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, अंतरंग सदस्य व आर्यसमाज, गांधी चौक लातूरचे प्रधान श्री ओमप्रकाश पाराशर , श्री विज्ञानमुनिजी ,वैदिक गर्जना मासिकाचे संपादक डॉ . नयनकुमार आचार्य यांचीही प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थिती होती.

प्रारंभी श्री गुरुजी यांचा श्री कव्हेकर पाटील व इतरांच्या शुभहस्ते सत्कार करण्यात आला. आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात श्री कव्हेकर यांनी महर्षी दयानंद यांच्या विश्व कल्याणकारी विचारांवर प्रकाश टाकला. गुरुजींनी दयानंदांच्या मानवतावादी विचारांचा विद्यार्थ्यांमध्ये प्रचार व प्रसार करण्यासाठी पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजींनी आपले जीवन वाहिले. मराठवाड्याच्या पावन भूमीत जन्माला आलेले हे तपस्वी व्यक्तिमत्व निश्चितच राष्ट्रउभारणीच्या कार्यात 'दीपस्तंभासारखे' नव्या पिढीला प्रेरणा देत राहतील.

यावेळी विज्ञानमुनीजी व श्री पाराशर यांनीही विचार मांडले. सभेचे

मंत्री श्री दिवे यांनी 'गुरुजीनी नेहमी विद्यार्थी व तरुणांच्या कल्याणाचा विचार केला. एक प्रकारे त्यांनी शासनाच्या सामाजिक कार्याला हातभार लावला आहे, असे सांगितले.श्री नयनकुमार आचार्य यांनी आपल्या भाषणातून गुरुजी म्हणजे चालते-बोलते मानवतेचे व्यासपीठ' असल्याचे सांगितले. पूज्य गुरुजी जर होतकरू विद्यार्थ्यांना मिळाले नसते, तर ते दिशाहीन बनले असते. अध्यक्षीय समारोपात श्री मोरे यांनी सर्वांच्या वतीने स्वामीजींचे अभीष्टचिंतन करून त्यांना याही पुढे उत्तम आरोग्य व दीर्घायुष्य लाभो,अशी कामना केली. यावेळी अँड. पांडुरंगराव खरे, कालिदास गंडाळे यांनीही विचार मांडले व शुभेच्छा दिल्या. प्रारंभी पं.चंद्रेश्वरजी शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली **'आयुष्कामेष्टी यज्ञ'** संपन्न झाला. नंतर कु. श्रेयसी लोखंडे व सौ.कांचन शास्त्री यांनी भजने सादर केली. मान्यवरांच्या स्वागतानंतर विविध संस्था, संघटना आणि व्यक्तिगत रूपाने पूज्य गुरुजींचा पुष्पहार घालून सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन महाराष्ट्र आर्यवीर दलाचे अधिष्ठाता श्री व्यंकटेश हालिंगे यांनी केले, तर आभार सौ. श्रुती चुडमुडे यांनी मानले. कार्यक्रमास शहरातील चारही आर्य समाजांचे पदाधिकारी गुरुजींचे शिष्य मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होते. स्वामीजींचा वाढदिवस परळी येथील श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमात देखील साजरा करण्यात आला. यावेळी मुनीजनांनी व आचार्यजींनी स्वामीजींना शुभेच्छा देऊन दीर्घायुरारोग्य चिंतीले.

महर्षि दयानंदांच्या जीवनचरित्राचे
परिश्रमपूर्वक संशोधन करणारे तत्त्वचिंतक,
आर्य समाजाचे प्रसिद्ध इतिहास तज्ज्ञ,
आर्यलेखक, पत्रकार, वैदिक गर्जना मासिकाचे
संपादक तसेच हिंदी भाषेचे विद्वान, अभ्यासक

स्वर्गीय प्रा.डॉ.कुशलदेवजी शास्त्री

यांच्या दहाव्या स्मृती (दि.८ जानेवारी)दिनानिमित्त

त्यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली
व विनम्र अभिवादन..!

वार्ता विशेष

'आर्य दिनदर्शिके'चे प्रकाशन

महर्षी दयानंद यांचे सुविचार, आर्य जगताचे प्रसिद्ध दिवंगत विद्वान व नेते यांचे आकर्षक फोटो आणि विविध तारखांसंदर्भात मौलिक माहिती यांनी परिपूर्ण असलेल्या आर्ट पेपरवरील बहुरंगी आर्य दिनदर्शिकेचे प्रकाशन आर्य समाज पिंपरीचे प्रधान श्री मुरलीधरजी सुंदरानी, मंत्री श्री कमलेशजी धर्मानी, उपप्रधान श्री माधवराव देशपांडे यांच्या हस्ते व डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं.विवेक शास्त्री,उपमंत्री श्री वासवानी, श्री दत्ता सुर्यवंशी, श्री दिगंबरजी रिद्धीवाडे यांच्या प्रमुख उपस्थितीत संपन्न झाला. आकर्षक डिझाईन्स व अतिशय उपयुक्त माहितीने सजलेली ही आर्य दिनदर्शिका प्रकाशित करण्यासाठी सभेचे प्रधान श्री योगमुनी यांच्या मार्गदर्शनाखाली मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, संपादक प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, विजयकुमार कानडे , ज्ञानकुमार आर्य यांनी प्रयत्न केले. संगणकीय मुद्रण कार्य श्री अनंत लोखंडे यांनी मोठ्या परिश्रमाने व कौशल्याने पूर्ण केले. या सुंदर व मनमोहक अशा दिनदर्शिकेचे स्वागत आर्य जणांकडून उत्स्फूर्तपणे होत आहे.

शोकवार्ता

मधुकरराव चटके यांचे निधन

सोलापूर येथील आर्य समाजाचे अंतरंग सदस्य व अध्ययनशील असे अभ्यासू प्रचारक कार्यकर्ते श्री मधुकरराव लक्ष्मणजी चटके यांचे मागील महिन्यात अल्पशा आजाराने दुःखद निधन झाले. ते ७२ वर्षे वयांचे होते. त्यांच्या मागे पतकी, मुलगा, सून व नातवंडे असा परिवार आहे. उच्चविद्याविभूषित असे जिज्ञासूवृत्तीचे आर्य कार्यकर्ते श्री चटके हे वरिष्ठ दिवंगत आर्यसमाजी स्व.बापूसिंहजी आर्य यांच्या संपर्कामुळे आर्य समाजाकडे वळले. अनेक वैदिक ग्रंथांच्या अध्ययनाने त्यांच्या मनात सत्य सिद्धांतांची रुजवण झाली आणि एक सच्चा वैदिक धर्मी म्हणून ते नावारूपाला आले. यामुळे त्यांची वैचारिक बैठक मजबूत झाली.सभेच्या श्रावणी वेद प्रचार अभियानात त्यांनी दोन वर्षे प्रचारक म्हणून कार्य केले. अशा एका क्रियाशील कार्यकर्त्यांच्या निधनामुळे सोलापूर आर्य समाजाची हानी झाली आहे. दिवंगत श्री चटके यांच्या पार्थिवावर पं.राजवीरजी शास्त्री, अरुण सांगळे, प्रशांत गायकवाड, वेदसुमन आर्य यांनी वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार केले.

दिवंगत आत्म्यास आर्य जनांची भावपूर्ण श्रद्धांजली व शोकसंवेदना..!

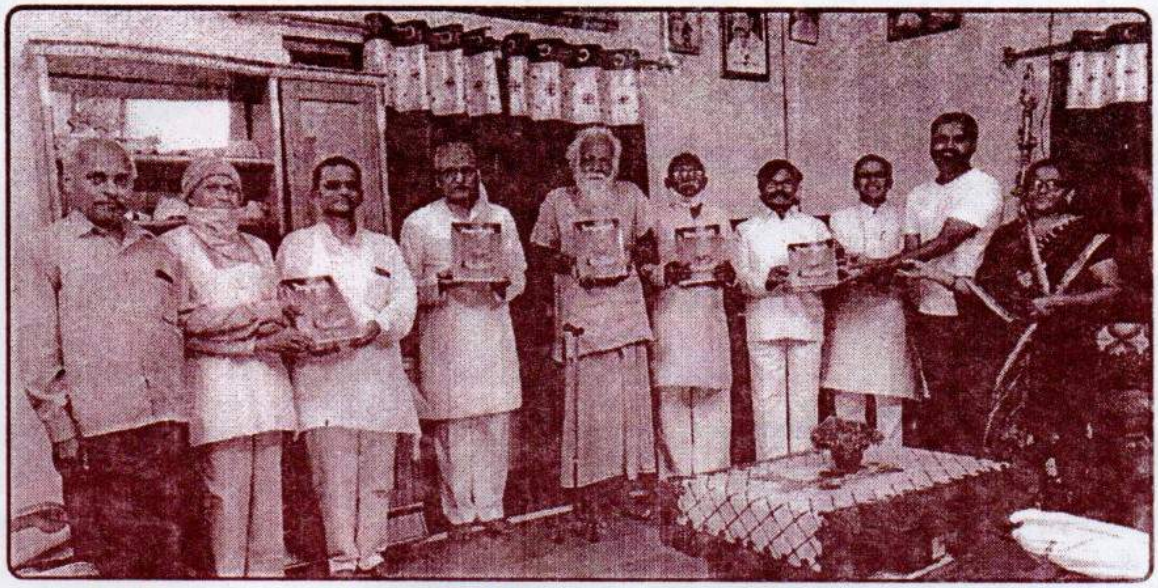

मराठी 'विशुद्ध मनुस्मृति' का विमोचन करते हुए स्वामी श्रद्धानन्दजी एवं अन्य।

पिंपरी–पुणे में आर्य दिनदर्शिका का विमोचन मान्यवरों के हाथों सम्पन्न हुआ।

पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी के १०३ वे जन्मदिवस पर अभिनन्दन करते हुए आर्यजन।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा, सेहत के प्रति जागरुकता शुद्धता एवं गुणवत्ता, करोडों परिवारों का विश्वास, यह है एम.डी.एच.का इतिहास जो पिछले ९३ वर्षों से हर कसौटी पर खरे उतरे हैं - जिनका कोई विकल्प नहीं। जी हां यही हैं आपकी सेहत के रखवाले

MDH

मसाले

असली मसाले

सच-सच

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !

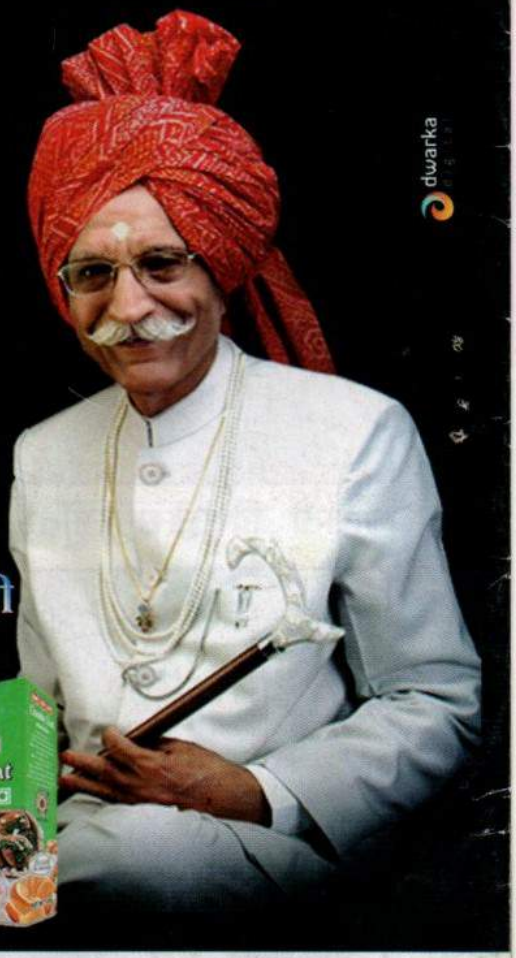

MAHASHIAN DI HATTI LTD.
Regd.Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,
Ph : 25939609,. 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

आर्य जगत के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. _____

_____

_____

_____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

॥ ओ३म् ॥

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट